(i) Printed Pages: 3 Roll No. .....

(ii) Questions : 9 Sub. Code : 0 3 1 2

Exam. Code : 0 0 0 4

B.A./B.Sc. (General) 4th Semester

1059

SANSKRIT (Elective)

Paper—Natak Avem Vyakaran

Time Allowed : Three Hours] **[Maximum Marks : 90**

नोट :— सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

I. किन्हीं **तीन** की सप्रसङ्ग अनुवाद एवं व्याख्या कीजिए :

(i) सेनानिनादपटहस्वनशङ्खनादैश्चण्डानिलाहतमहोदधिनादकल्पैः।
गाङ्गेयमूर्ध्नि पतितैरभिषेकतोयैः सार्धं पतन्तु हृदयानि नराधिपानाम्।।

(ii) कृष्णापराभवभुवारिपुवाहिनीभकुम्भस्थलीदलननतीक्ष्ण गदाधरस्य।
भीमस्य कोपशिखिना युधि पार्थपत्रिचण्डानिलैश्च कुरुवंशवनं विनष्टम्।।

(iii) पुण्य संचयसम्प्राप्तामधिगम्य नृपश्रियम्।
वञ्चयेद् यः सुहृद् बन्धून् स भवेद्विफलश्रमेः।।

(iv) दातुमर्हसि मद्वाक्याद् राज्यार्धं धृतराष्ट्रज।
अन्यथा सागरान्तां गां हरिष्यन्ति हि पाण्डवाः।।

(v) महीभारापनयनं कर्तुं जातस्य भूतले।
अस्मिन्नेवं गते देव ननु स्यद्विफलः श्रमः

(vi) सम्बन्धो बन्धुभिः श्रेयान् लोकयोरुभयोरपि। 3×10=30

II. भास की रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दें।

अथवा

'दूतवाक्यम्' के आधार पर 'श्रीकृष्ण' का चरित्र-चित्रिण कीजिए। 5

III. किन्हीं **दस** शब्दों को संस्कृत में लिखें :

गेहूँ का आटा, दाल, आचार, शक्कर, उड़द, मसूर, रायता, काँच का गिलास, जौ, हल्दी, सौंफ, चीमठा, टब, चम्मच, लोटा।

10×1=10

IV. किन्हीं **पाँच** के समस्त पद/विग्रह लिखें :

स्वर्गगतः, शंकुलाखण्डः, भूतेभ्यःबलि, पापमुक्तः, तस्यपुरुषः, आतपशुष्कः, न प्रत्यक्षम्, पञ्चवटी, शताब्दी, चर्म करोति इति। 5×1=5

V. किन्हीं **पाँच** धातुओं के यथानिर्दिष्ट प्रत्ययान्त रूप लिखें :

कथ्+क्त, शा+क्तवतु, क्री+कत्वा, मिल्+तुमुन्, दा+क्त, प्रच्छ्+क्तवतु, कुप्+तुमुन्, अस्+कत्वा, त्यज्+क्त, दृश्+तुमुन्। 5×1=5

VI. किन्हीं **दो** के शब्दरूप सभी विभक्तियों तथा तीनों वचनों में लिखें :

किम् (नपुंसकलिंग), सर्व (स्त्रीलिंग), महत् (पुल्लिग), बलवत् (पुल्लिग)।

2×5=10

VII. किन्हीं **दो** धातुओं के रूप यथानिर्दिष्ट लकारों में लिखें :

कथ्(लृट्लकार), कृ(लट्लकार), ज्ञा(लोट्लकार), श्रु(लङ्लकार)।

2×5=10

VIII. किन्हीं **दो** छन्दों के लक्षण लिखकर गणचिह्न सहित उदाहरण भी स्पष्ट करें :

मन्दाक्रान्ता, वसन्ततिलका, भुजंगप्रयात, मालिनी। 2×5=10

IX. किन्हीं **पाँच** वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

(i) हरिः वैकुण्ठे अधिशेते

(ii) ग्रामस्य सर्वतः उद्यानानि सन्ति

(iii) शिक्षकः शिष्यं क्रुध्यति

(iv) देवः नमः

(v) सः अश्वेन पतति

(vi) मृगाः पादाभ्याम् चलन्ति

(vii) वृक्षं पत्रं पतति

(viii) गंगा हिमालये प्रभवति

(ix) अयं सुवर्णं कटकोऽस्ति

(x) त्वम् उद्यानं भ्रमसि। 5×1=5